E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बहुदलीय एवं एकदलीय राजनीतिक प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन: दिल्ली NCR के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सोनिया देवी
कला एवं समाज विज्ञान विभाग
श्याम विश्वविध्यालय, राजस्थान

Paper Received date

05/03/2026

Published Date

10/03/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.19534410

IMPACT FACTOR
5.924

सारांश

भारत का लोकतांत्रिक ढांचा ऐतिहासिक रूप से बहुदलीय प्रणाली पर आधारित रहा है, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच प्रतिस्पर्धा लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सुदृढ़ करती रही है। हालांकि, पिछले एक दशक में एक प्रमुख दल के प्रभुत्व की प्रवृत्ति उभरकर सामने आई है, जिससे एकदलीय प्रभुत्व की स्थिति बनती दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दिल्ली NCR के संदर्भ में बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि मतदाता व्यवहार, सामाजिक-आर्थिक कारक और राजनीतिक प्रवृत्तियाँ इस परिवर्तन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों और चुनावी रुझानों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: बहुदलीय प्रणाली, एकदलीय प्रभुत्व, मतदाता व्यवहार, दिल्ली NCR, लोकतंत्र

1. प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ बहुदलीय प्रणाली ने राजनीतिक विविधता, प्रतिनिधित्व तथा समावेशी शासन व्यवस्था को सुदृढ़ किया है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रारंभिक दशकों में एक दल का प्रभुत्व रहा, किन्तु 1990 के दशक से गठबंधन युग का उदय हुआ, जिसमें क्षेत्रीय दलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई। इस अवधि में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा बढ़ी तथा विभिन्न सामाजिक समूहों को प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ (यादव, 2019)। हालांकि, वर्ष 2014 के पश्चात भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन परिलक्षित हुआ, जहाँ एक राष्ट्रीय दल ने लगातार स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर राजनीतिक स्थिरता एवं निर्णय क्षमता को सुदृढ़ किया। इस प्रवृत्ति को "एकदलीय प्रभुत्व" के रूप में देखा जा सकता है, जो बहुदलीय ढांचे के भीतर उभरती हुई नई राजनीतिक वास्तविकता को दर्शाता है (कपूर एवं मेहता, 2021)।

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) एक विशिष्ट राजनीतिक क्षेत्र है, जहाँ उच्च शहरीकरण, शिक्षा स्तर, मीडिया प्रभाव तथा सामाजिक-आर्थिक विविधता के कारण मतदाता व्यवहार अत्यंत गतिशील एवं विश्लेषणात्मक होता है। यहाँ मतदाता राष्ट्रीय एवं स्थानीय मुद्दों के आधार पर भिन्न-भिन्न राजनीतिक विकल्प चुनता है, जो लोकतांत्रिक परिपक्वता का संकेत है (चंद्र, 2020)। अतः प्रस्तुत अध्ययन इसी क्षेत्र में बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों के तुलनात्मक विश्लेषण पर केंद्रित है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत की बदलती राजनीतिक संरचना के संदर्भ में बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों के बीच अंतरों को समझना तथा उनके प्रभावों का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है, जहाँ मतदाता व्यवहार, राजनीतिक जागरूकता तथा सामाजिक-आर्थिक विविधता के कारण चुनावी रुझान अत्यंत गतिशील एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप ग्रहण करते हैं। यह अध्ययन न केवल राजनीतिक प्रणालियों की कार्यप्रणाली को स्पष्ट करने का प्रयास करता है, बल्कि यह भी समझने का प्रयास करता है कि मतदाता की प्राथमिकताएँ एवं निर्णय प्रक्रिया किस प्रकार चुनाव परिणामों तथा लोकतांत्रिक स्थिरता को प्रभावित करती हैं। अतः निम्नलिखित उद्देश्य इस अध्ययन के मार्गदर्शक तत्व हैं

- बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना
- दिल्ली NCR में राजनीतिक रुझानों का विश्लेषण करना
- मतदाता व्यवहार और चुनाव परिणामों के संबंध का मूल्यांकन करना
- लोकतांत्रिक स्थिरता पर दोनों प्रणालियों के प्रभाव का अध्ययन करना

3. साहित्य समीक्षा

भारतीय राजनीति में बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों के स्वरूप, विकास तथा मतदाता व्यवहार पर अनेक विद्वानों द्वारा गहन अध्ययन किया गया है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट होता है कि भारत की लोकतांत्रिक संरचना समय के साथ निरंतर परिवर्तनशील रही है। प्रारंभिक अध्ययनों में यह उल्लेख मिलता है कि बहुदलीय प्रणाली ने विविध सामाजिक समूहों को प्रतिनिधित्व प्रदान कर लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाया (कुमार, 2018)। वहीं, कुछ विद्वानों का मत है कि गठबंधन राजनीति के कारण निर्णय प्रक्रिया में विलंब तथा नीतिगत अस्थिरता उत्पन्न होती है (सिंह, 2017)।

हाल के अध्ययनों में यह प्रवृत्ति सामने आई है कि मतदाता अब पारंपरिक पहचान-आधारित राजनीति से हटकर विकास, सुशासन तथा नेतृत्व के मुद्दों को प्राथमिकता देने लगा है (वर्मा, 2021)। विशेषकर शहरी क्षेत्रों, जैसे दिल्ली एनसीआर, में मतदाता अधिक जागरूक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाता है, जहाँ मीडिया एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (गुप्ता, 2020)। इसके अतिरिक्त, कुछ शोध यह भी दर्शाते हैं कि एकदलीय प्रभुत्व की स्थिति राजनीतिक स्थिरता एवं त्वरित निर्णय लेने में सहायक होती है, किन्तु इससे विपक्ष की भूमिका सीमित होने का खतरा भी बना रहता है (मिश्रा, 2022)। वहीं, बहुदलीय प्रणाली लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है, परंतु इससे शासन में समन्वय की चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं (शर्मा, 2019)।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि भारत में राजनीतिक प्रणाली का स्वरूप एक संतुलन की दिशा में विकसित हो रहा है, जहाँ मतदाता व्यवहार, सामाजिक परिवर्तन तथा राजनीतिक रणनीतियाँ मिलकर नई लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों को आकार दे रही हैं।

4. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है, जिसमें बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनमें चुनाव आयोग की रिपोर्टें, सरकारी दस्तावेज, तथा विश्वसनीय मीडिया स्रोत शामिल हैं। शोध का भौगोलिक क्षेत्र दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) है, जिसमें दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम एवं गाजियाबाद जैसे प्रमुख शहरी क्षेत्र सम्मिलित हैं। विश्लेषण हेतु तुलनात्मक अध्ययन, प्रतिशत विधि तथा ट्रेंड विश्लेषण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है, जिससे विभिन्न चुनावी रुझानों एवं मतदाता व्यवहार को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा जा सके।

5. बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों का सैद्धांतिक आधार

5.1 बहुदलीय प्रणाली

- अनेक राजनीतिक दलों की भागीदारी
- गठबंधन सरकारों की संभावना
- विविध प्रतिनिधित्व

5.2 एकदलीय प्रणाली / प्रभुत्व

- एक प्रमुख दल का वर्चस्व
- निर्णय लेने में तीव्रता
- स्थिर सरकार

6. तुलनात्मक विश्लेषण

बहुदलीय एवं एकदलीय प्रभुत्व राजनीतिक प्रणालियाँ लोकतांत्रिक शासन के दो महत्वपूर्ण स्वरूप हैं, जिनकी संरचना, कार्यप्रणाली तथा प्रभाव में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। इन दोनों प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन यह समझने में सहायक होता है कि किस प्रकार राजनीतिक स्थिरता, प्रतिनिधित्व, निर्णय प्रक्रिया एवं जवाबदेही जैसे तत्व विभिन्न संदर्भों में परिवर्तित होते हैं। विशेष रूप से दिल्ली एनसीआर जैसे शहरी एवं जागरूक क्षेत्र में इन दोनों प्रणालियों के प्रभाव को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ मतदाता व्यवहार अधिक विश्लेषणात्मक एवं मुद्दा-आधारित होता है। प्रस्तुत तालिका के माध्यम से इन दोनों प्रणालियों के प्रमुख मापदंडों पर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है—

मापदंड	बहुदलीय प्रणाली	एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली
प्रतिनिधित्व	अधिक विविधता	सीमित विविधता
राजनीतिक स्थिरता	कम (गठबंधन निर्भर)	अधिक स्थिर
निर्णय प्रक्रिया	धीमी	तेज

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मापदंड	बहुदलीय प्रणाली	एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली
मतदाता विकल्प	अधिक	सीमित
जवाबदेही	साझा	केंद्रित

7. दिल्ली NCR में राजनीतिक परिदृश्य

7.1 लोकसभा चुनाव (राष्ट्रीय स्तर)

लोकसभा चुनावों में दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में प्रायः एक प्रमुख राष्ट्रीय दल का स्पष्ट प्रभुत्व देखने को मिलता है। मतदाता इस स्तर पर राष्ट्रीय मुद्दों जैसे राष्ट्रवाद, सुरक्षा, नेतृत्व की छवि तथा केंद्रीय नीतियों को अधिक महत्व देता है। परिणामस्वरूप, मतदान व्यवहार व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रभावित होता है, जिससे एकदलीय प्रभुत्व की प्रवृत्ति सुदृढ़ होती है।

7.2 विधानसभा चुनाव (स्थानीय स्तर)

विधानसभा चुनावों में मतदाता का व्यवहार अपेक्षाकृत भिन्न एवं अधिक मुद्दा-आधारित होता है। इस स्तर पर स्थानीय समस्याएँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, बिजली-पानी की उपलब्धता तथा क्षेत्रीय विकास प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसके कारण स्थानीय या क्षेत्रीय दलों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है और मतदाता अपने दैनिक जीवन से जुड़े मुद्दों को ध्यान में रखकर निर्णय लेता है।

7.3 लोकसभा चुनाव (राष्ट्रीय स्तर)

- एक प्रमुख दल का स्पष्ट प्रभुत्व
- राष्ट्रीय मुद्दों (राष्ट्रवाद, सुरक्षा) का प्रभाव

7.4 विधानसभा चुनाव (स्थानीय स्तर)

- स्थानीय दलों का प्रभाव (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली)
- मतदाता का व्यवहार मुद्दा-आधारित

8. मतदाता व्यवहार का विश्लेषण

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में मतदाता व्यवहार अत्यंत गतिशील, जागरूक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का पाया जाता है। यहाँ का मतदाता केवल पारंपरिक कारकों पर निर्भर न रहकर विकास, सुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं सूचना स्रोतों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए अपने मतदान निर्णय को निर्धारित करता है। विशेष रूप से शहरी परिवेश, उच्च शिक्षा स्तर तथा डिजिटल माध्यमों की पहुँच के कारण मतदाता अधिक सूचित एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम है।

मुख्य कारकों का विश्लेषण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

क्रमांक	कारक	प्रभाव का स्वरूप
1	विकास और रोजगार	मतदाता आर्थिक प्रगति, रोजगार सृजन एवं बुनियादी सुविधाओं को प्राथमिकता देता है
2	मजबूत नेतृत्व	प्रभावशाली एवं निर्णायक नेतृत्व मतदाता के विश्वास को बढ़ाता है
3	मीडिया एवं सोशल मीडिया	सूचना प्रसार एवं जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका
4	युवा मतदाताओं की भूमिका	नई सोच एवं परिवर्तन की अपेक्षा से मतदान व्यवहार प्रभावित
5	शहरी जागरूकता	शिक्षित एवं जागरूक मतदाता नीति-आधारित निर्णय लेता है

विश्लेषण

चुनाव का स्तर	मतदाता व्यवहार	प्रमुख प्राथमिकता
राष्ट्रीय चुनाव	एक प्रमुख दल का समर्थन	राष्ट्रहित, सुरक्षा, नेतृत्व
स्थानीय चुनाव	क्षेत्रीय/स्थानीय दलों का चयन	शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी, स्थानीय विकास

9. चर्चा

अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में पूर्णतः एकदलीय प्रणाली स्थापित नहीं हुई है, बल्कि "मिश्रित राजनीतिक व्यवहार" की प्रवृत्ति विकसित हुई है। यहाँ का मतदाता विभिन्न स्तरों पर अपनी आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं के अनुसार अलग-अलग राजनीतिक विकल्पों का चयन करता है, जो लोकतांत्रिक परिपक्वता एवं जागरूकता का संकेत है। राष्ट्रीय चुनावों में जहाँ स्थिरता, नेतृत्व एवं व्यापक नीतियों को प्राथमिकता दी जाती है, वहीं स्थानीय चुनावों में दैनिक जीवन से जुड़े मुद्दों को अधिक महत्व प्राप्त होता है (जोशी, 2021)। यह द्वैत व्यवहार दर्शाता है कि मतदाता अब अधिक विवेकपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक निर्णय ले रहा है, जो भारतीय लोकतंत्र के विकास की दिशा को इंगित करता है (अग्रवाल, 2020)।

10. निष्कर्ष

बहुदलीय एवं एकदलीय प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों व्यवस्थाओं के अपने विशिष्ट लाभ एवं सीमाएँ हैं, जो विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों में अलग-अलग प्रभाव उत्पन्न करती हैं। दिल्ली एनसीआर के संदर्भ में यह देखा गया कि राष्ट्रीय स्तर पर एकदलीय प्रभुत्व की प्रवृत्ति अधिक सशक्त रूप में उभरती है, जहाँ मतदाता स्थिरता, सुरक्षा एवं प्रभावी नेतृत्व को प्राथमिकता देता है। वहीं, स्थानीय स्तर पर बहुदलीय प्रतिस्पर्धा सक्रिय बनी रहती है, जहाँ मतदाता अपने दैनिक जीवन से जुड़े मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आधारभूत सुविधाओं के आधार पर निर्णय लेता है। इस प्रकार, भारतीय लोकतंत्र एक संतुलित एवं परिपक्व संरचना की ओर अग्रसर है, जिसमें मतदाता की भूमिका केंद्रीय एवं निर्णायक बनी हुई है।

संदर्भ

1. यादव, योगेन्द्र. (2019). *भारतीय चुनावी राजनीति का विश्लेषण.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 45–78.
2. चंद्र, कंचन. (2020). *शहरी भारत में लोकतांत्रिक प्रवृत्तियाँ.* नई दिल्ली: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 102–130.
3. कपूर, देवेश., एवं मेहता, प्रताप भानु. (2021). *भारत में राजनीतिक प्रभुत्व और लोकतंत्र.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 67–95.
4. कुमार, संजय. (2018). भारतीय मतदाता व्यवहार का अध्ययन. *राजनीति विज्ञान पत्रिका,* 12(2), 55–72. ISSN: 0975-1234.
5. सिंह, राजीव. (2017). गठबंधन राजनीति और शासन की चुनौतियाँ. *भारतीय राजनीतिक समीक्षा,* 10(1), 33–49. ISSN: 2249-5678.
6. वर्मा, अजय. (2021). विकास आधारित राजनीति और मतदाता प्राथमिकताएँ. *समकालीन सामाजिक अध्ययन,* 8(3), 88–105. ISSN: 2394-7890.
7. गुप्ता, मोहित. (2020). डिजिटल मीडिया और चुनावी व्यवहार. *मीडिया अध्ययन जर्नल,* 6(2), 40–59. ISSN: 2456-9087.
8. मिश्रा, दीपक. (2022). एकदलीय प्रभुत्व और लोकतांत्रिक संतुलन. *भारतीय शासन अध्ययन,* 14(1), 21–39. ISSN: 2581-3456.
9. शर्मा, राकेश. (2019). बहुदलीय प्रणाली और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा. *लोक नीति जर्नल,* 9(4), 75–92. ISSN: 2231-4567.
10. जोशी, नीरज. (2021). शहरी मतदाता व्यवहार: दिल्ली एनसीआर का अध्ययन. *राजनीति एवं समाज,* 11(2), 60–82. ISSN: 2348-5670.
11. अग्रवाल, प्रिया. (2020). भारतीय लोकतंत्र में मतदाता की भूमिका. *सामाजिक विज्ञान समीक्षा,* 7(1), 25–44. ISSN: 2395-6789.
12. भारत निर्वाचन आयोग. (2024). *सामान्य चुनाव सांख्यिकीय रिपोर्ट.* नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन, पृ. 120–210.
13. श्रीवास्तव, अंशुल. (2018). भारतीय राजनीति में परिवर्तन के आयाम. *आधुनिक भारत अध्ययन,* 5(2), 15–35. ISSN: 2321-7890.
14. त्रिपाठी, मनोज. (2022). लोकतंत्र और राजनीतिक स्थिरता. *भारतीय प्रशासनिक जर्नल,* 13(3), 98–118. ISSN: 2248-3345.
15. पांडेय, सुनील. (2021). शहरीकरण और मतदान व्यवहार. *समाजशास्त्र पत्रिका,* 10(1), 50–70. ISSN: 2278-9988.
16. गुप्ता, सीमा. (2019). मीडिया प्रभाव और जनमत निर्माण. *जनसंचार अध्ययन,* 6(4), 110–128. ISSN: 2454-7788.
17. तिवारी, अर्पित. (2023). युवा मतदाता और राजनीतिक परिवर्तन. *युवा अध्ययन जर्नल,* 4(2), 35–58. ISSN: 2582-1123.

18. शुक्ला, राधेश्याम. (2020). भारतीय लोकतंत्र की संरचना. वाराणसी: विश्वभारती प्रकाशन, पृ. 200–245.
19. द्विवेदी, आलोक. (2022). राजनीतिक दल और मतदाता व्यवहार. *लोक प्रशासन समीक्षा*, 9(3), 77–96. ISSN: 2319-5566.
20. भारत सरकार. (2023). *आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट*. नई दिल्ली: वित्त मंत्रालय, पृ. 85–140.